सतत विकास पर रेडियो धारावाहिक # 40

एपिसोड शीर्षक : सहमा हुआ समुद्र

अवधिः 27 मिनट

स्क्रिप्टः Thomas Manuel

समन्वयकः श्री बी.के. त्यागी

अनुवाद : श्रीनिवास ओली

एपिसोड सार :

एक मां, अपनी बेटी को सोते समय कहानी सुना रही है। ये कहानी एक राज्य के दो राजकुमारों दयानंद और राजकुमार के बारे में है। राजकुमार हीरानंद बेहद आलसी है। एक दिन वह दयानंद को जादू से मछली बना देता है ताकि वह पूरे राज्य पर शासन कर सके। मछली बनने के बाद दयानंद भारत के पूरे समुद्री तट पर घूमता रहता है। बाद में उसे एक करामाती रानी की मिलती है जो दयानंद को फिर से इंसानी रूप दे देती है। इसके बाद वह अपने राज्य वापस लौटता है और अपने भाई को हराकर फिर से राज्य को हासिल कर लेता है। एक मछली के रूप में दयानंद को भारत के समुद्री इकोसिस्टम से जुड़े हुए तमाम तथ्यों की जानकारी हासिल होती है।

पात्र परिचय

1. **रेनू -** दस साल की लड़की
2. **मीना –** रेनू की माताजी / 35 वर्ष
3. **हीरानंद –**आलसी राजकुमार / 30 वर्ष

4. **सरोज –** हीरानंद की पत्नी / 25 वर्ष

5. **दयानंद –** अच्छा राजकुमार / 25 वर्ष

6. **तीरथ –** मंत्री / 50 वर्ष

7. **रानी –** 30-35 वर्ष

SIGNATURE TUNE ..... FADEOUT

उद्घोषक : (*Welcome+Recap+Intro*)

रेडियो विज्ञान धारावाहिक ... में आपका स्वागत है। धारावाहिक की पिछली कड़ी में हमने महासागरों और उनके इकोसिस्टम के बारे में जाना। आज हम बात करेंगे कि किस तरह इंसान ने अपने लालच और बेतरतीब विकास की चाह में समुद्रों की रंगबिरंगी दुनिया को कितना बदरंग कर दिया है। आखिर ऐसी कौन सी वजह हैं कि ना सिर्फ समुद्र, बल्कि उसके खूबसूरत तट भी बदतर होते जा रहे हैं। जानने के लिए चलते हैं रेनू के घर, जहां वो अपनी मम्मी से कहानी सुनने की ज़िद कर रही है।

---------- SIGNATURE TUNE----------

SCENE ONE (रेनू का घर / रात का वक्त)

रेनू : **(रुआंसे स्वर में)** मम्मी, मुझे नींद नहीं आ रही है।

मीना : क्या बात है रेनू ? क्या दिक्कत हो रही है ? सो जाओ आराम से।

रेनू : मम्मी, मुझे कोई कहानी सुना दो ना प्लीज़। कहानी सुनकर शायद मुझे नींद आ जाए।

मीना : ठीक है, लेकिन वादा करो कि फिर तुम सो जाओगी।

रेनू : हां... हां... पक्का वादा रहा।

मीना : तो ठीक है। मैं तुम्हें आज एक ऐसे राजकुमार की कहानी सुनाती हूं जो कि मछली बन गया था।

रेनू : **(आश्चर्य के साथ)**क्या कहा ! राजकुमार, जो मछली बन गया था? ऐसा कैसे हो सकता है मम्मी?

मीना : रेनू, या तो तुम सवाल ही पूछ लो या फिर कहानी ही सुन लो।

रेनू : सॉरी मम्मी... ठीक है.. कहानी सुनाओ प्लीज़।

मीना : एक बार की बात है। भारत से समुद्र तटीय इलाके में एक राज्य था।

रेनू : **(बीच में टोकते हुए)** भारत के कौन से तट में मम्मी ?

मीना : **(असमंजस भरे स्वर में)** कौन से, मतलब ?

रेनू : मम्मी, भारत दो समुद्र तट हैं। एक बंगाल की खाड़ी और दूसरा अरब सागर का। आप कौन से तट की बात कर रही हैं।

मीना : **(हंसते हुए)** ये तो मुझ नहीं मालूम है बेटी।

रेनू : भारत की तटरेखा तो बहुत ज्यादा लंबी है। हमारे देश में करीब साढ़े सात हजार किलोमीटर लंबा समुद्री तट है। और अगर आप सिर्फ समुद्री तट कहती हैं तो इसका मतलब हुआ कि वो जगह हमारे देश के नौ राज्यों में से कहीं भी हो सकती है। ये राजकुमार कहां रहता था ?

मीना : अच्छा, ये बताओ कि सबसे बड़ा समुद्र तट कौन से राज्य में है ?

रेनू : **...** वो तो गुजरात में है।

मीना : ठीक है, उस कहानी को गुजरात का ही मान लो... लेकिन बीच मैं और ज्यादा सवाल मत पूछना और आगे की कहानी सुनो।

रेनू : ठीक है मम्मी।

मीना : उस राज्य में राजा और रानी के दो बेटे थे, यानी दो राजकुमार। जब राजा बूढ़ा हो गया तो उसने राजकाज की जिम्मेदारी राजकुमारों को दे दी। उस राज्य के लिए समुद्र की काफी ज्यादा अहमियत थी। शायद तुमको मालूम होगा कि आजकल भी भारत की एक तिहाई आबादी समुद्र और समुद्र के तटीय इलाकों पर निर्भर है। इससे तुम अंदाजा लगा सकती हो कि पहले के वक्त में क्या स्थिति रही होगी।

रेनू : लेकिन समुद्र और समुद्र तटों पर लोगों की ये निर्भरता क्यों है ?

मीना : इसकी बहुत सारी वजहें हैं। कई बार तटीय इलाके खेती के लिहाज से बेहतर माने जाते हैं। पुराने वक्त में शहर भी समुद्र के तट पर ही बसे क्योंकि तब बंदरगाह व्यापार और यात्रा के लिए बहुत अहमियत रखते थे। आजकल तो लोग समुद्री जहाजों का इस्तेमाल यात्रा के लिए नहीं के बराबर ही करते हैं। इसके बावजूद देशों के बीच व्यापार के लिए बंदरगाहों की अहमियत अब भी बरकरार है।

रेनू : और समुद्र के किनारे बसे हुए पुराने शहर ?

मीना : वो शहर तो अब काफी बड़े हो चुके हैं। वहां काफी सारे उद्योग और कारोबार चल रहे हैं। काफी सारे लोग उन शहरों में रोजगार के लिए जाते रहते हैं जिससे वो लगातार फैलते जा रहे हैं।

रेनू : अच्छा, तो मम्मी ये बताओ कि वो राजकुमार आखिर करते क्या थे ?

मीना : हां, उस राज्य को दोनों राजकुमारों में बांट दिया गया था। वो अपनी प्रजा और राज्य की खुशहाली को लेकर निश्चिंत थे क्योंकि वहां की जमीन काफी ऊपजाऊ थी। वहां के लोग भी खूब मेहनत करते थे। लेकिन पहला राजकुमार यानी हीरानंद काफी आलसी था। वो अपने राजकाज को लेकर बेफिक्र रहता था।

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

(राजकुमार हीरानंद के दरबार का दृश्य)

हीरानंद : **(जम्हाई लेते हुए)** मंत्री धर्मा ! जरा बताइये तो, आज हमने कुछ करना तो नहीं है ?

धर्मा : महाराज, मछली पालन उद्योग में बडे बदलाव को लेकर आज मशवरा करना है। राज्य के तमाम लोगों में और मछुआरों में अराजकता फैल रही है। उनको दो वक्त का खाना मिलना मुश्किल हो गया है। बहुत ही मुश्किल हालात होते जा रहे हैं।

हीरानंद : तो भला इसमें हम क्या कर सकते हैं मंत्री ?

धर्मा : बहुत ही आसान उपाय है महाराज। आप मुझ जैसे किसी योग्य आदमी को पूरे मछली पालन उद्योग का जिम्मा दे दीजिए। मछली पकड़ने के कुशल तरीके अपनाकर मैं सभी पर निगरानी रखूंगा जिससे कि ज्यादा से ज्यादा मुनाफा हो सके। सभी मछुआरे मेरे अधीन ही काम करेंगे और पूरे राज्य को उसका फायदा मिलेगा।

हीरानंद : बहुत अच्छा धर्मा... बहुत अच्छा। जैसा तुम्हें ठीक लग रहा है वैसा ही करो। अभी तो मैं जरा कुश्ती का मुकाबला देखने के लिए जा रहा हूं। कहीं देर ना हो जाए।

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

(रेनू का घर / रात का वक्त)

रेनू : मम्मी, ये मंत्री तो बड़ा शातिर लग रहा है मुझे।

मीना : हां, वो तो है।

रेनू : वो कोई साजिश तो नहीं रच रहा है ?

मीना : हो सकता है। लेकिन कहानी इसके बारे में नहीं है। राजा का दूसरा बेटा बिल्कुल अलग था। उसका राजकाज ज्यादा न्यायपूर्ण और निष्पक्ष चल रहा था।

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

तीरथ : महाराज, कचरे के निपटान के लिए हमने जो व्यवस्था बनाई है उसमें काफी दिक्कतें आ रही हैं। बहुत सारे व्यापारी पूछ रहे हैं कि आखिर उनको नदी और समुद्र में कूड़ा-कचरा डालने से मना क्यों किया जा रहा है। महाराज, मुझे लगता है कि हमें उनकी बात सुननी चाहिए।

दयानंद : मंत्री तीरथ, आप उन सभी को बता दीजिए कि उनकी सहूलियत के लिए जो भी हो सकेगा मैं करूंगा, लेकिन ध्यान रहे कि समुद्र में कचरा डालने की ये पाबंदी पूरी सख्ती के साथ कायम रहेगी। एक राज्य के तौर पर हम समुद्र पर बहुत ज्यादा निर्भर हैं और ऐसे में हम उसे कूड़े-कचरे से नहीं भर सकते।

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

(रेनू का घर / रात का वक्त)

रेनू : ये राजकुमार तो पहले वाले की तुलना में काफी समझदार लग रहा है।

मीना : बिल्कुल सही कहा। उस राज्य के राजा के विचार भी बिल्कुल तुम्हारी तरह ही थे। राजा भी दोनों राजकुमारों के व्यवहार को देखता था उसने इसी वजह से दूसरे बेटे को अपना उत्तराधिकारी बनाने का इरादा कर लिया। इससे आलसी राजकुमार यानी हीरानंद बहुत नाराज हो गया और उसने शिकायतें करना शुरू कर दिया।

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

हीरानंद : **(गुस्से भरे स्वर में)** ये राज्य तो मेरा होना चाहिए। और अगर मुझे पूरा राज्य सौंपने में कोई दिक्कत है तो फिर इस राज्य को दो हिस्सों में बांट दो...। मेरे पिताजी तो बिल्कुल ही बेवकूफ हैं।

सरोज : मेरे प्राण प्रिय..। तुम फिक्र ना करो। मेरे पास तुम्हारी मुश्किलों का हल है।

हीरानंद : तुम भला मेरी क्या मदद करोगी सरोज ?

सरोज : मैं अपनी जादुई ताकतों का इस्तेमाल करूंगी। मैं इंद्रजाल के जरिये तुम्हारे भाई को एक मछली में बदल दूंगी और हमें उससे छुटकारा भी मिल जाएगा।

हीरानंद : **(चौंकते हुए)** क्या कहा..। तुम ऐसा कर सकती हो ?

सरोज : **(कुटिल स्वर में)** बिल्कुल। आखिर मेरी शैतानी शक्तियां कब काम आएंगी।

हीरानंद : बहुत अच्छा। मुझे बताओ कि आखिर तुम ये सब कैसे करोगी।

सरोज : **(कुटिल स्वर में)** देखो, उसे एक दावत के लिए बुलाओ। सभी लोगों के खाना खाने के बाद हम उसे राजमहल के झरोखे में समुद्र का नजारा देखने के बहाने से ले जाएंगे। वहीं पर मैं अपनी जादुई ताकत का इस्तेमाल करूंगी। जैसे ही वह मछली में बदल जाएगा तभी तुम उसे समुद्र में फेंक देना। बस हो जाएगा अपना काम... और उससे छुटकारा भी।

हीरानंद **(खुशी भरे स्वर में)** ठीक है..। मैं वैसा ही करूंगा, जैसा तुमने कहा है। इसके बाद तुम एक महारानी बन जाओगी और मैं एक राजकुमार।

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

(आपसी बातचीत का स्वर और खाने की मेज पर प्लेट और चम्मचों की आवाज़ें)

दयानंद : शुक्रिया भैया...। इतनी शानदार दावत के लिए शुक्रिया। आपने मुझे खाने पर बुलाया, मुझे बहुत अच्छा लगा। भैया, मैं वैसे भी आपसे मिलना चाह रहा था। मुझे कुछ कहना था आपसे।

हीरानंद : वो क्या भला ?

दयानंद : दरअसल, आपके बारे में ही बात करनी थी। मुझे लगता है कि आप जिस तरह से शासन कर रहे हैं उसमें कुछ बदलाव की जरूरत है। अगर हम भविष्य के नजरिये से सोचें तो हमारे राजकाज का ढंग...

(बीच में टोकते हुए)

हीरानंद : चलो बाहर चलकर बातें करते हैं..। सामने के झरोखे से समुद्र का खूबसूरत नजारा भी दिखता रहेगा।

(दोनों के चलने की आवाज़ / पदचाप)

दयानंद : वाह, कितना सुंदर नजारा है...। भैया, क्या आपको नहीं लगता कि इसे सहेज कर रखा जाना चाहिए ?

हीरानंद : **(तेज स्वर में)** अब बहुत हो गया तुम्हारा भाषण। तुम मुझे हमेशा ही तंग करते हो। सरोज, इस मूर्ख से छुटकारा दिलाओ मुझे !

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

(रेनू का घर / रात का वक्त)

मीना : ... और हीरानंद की पत्नी तो इसी पल का इंतजार कर रही थी। उसने अपनी जादूई ताकत से दयानंद को एक मछली में बदल दिया। उसी समय आलसी हीरानंद ने मछली बने हुए अपने भाई को समुद्र में फेंक दिया।

रेनू : ओह...। वो तो चट्टानों से टकराकर मर गया होगा ?

मीना : नहीं, वहां कोई चट्टान नहीं थी और उसकी जान बच गई।

रेनू : **(खुशी से)** चलो, ये तो अच्छा हुआ।

मीना : लेकिन अभी इतना खुश होने की जरूरत नहीं है, क्योंकि अच्छा राजकुमार अब भी सुरक्षित नहीं था। वो भले ही पानी में था लेकिन उसे मालूम था कि उसके भाई का इलाका एक मछली के रहने के लिए बेहद गंदा है। इसलिए वो लगातार तैरता ही रहा। इस तरह वो एक ऐसे अनजान सदाबहार जंगलों के इलाके में आ पहुंचा जहां इससे पहले कोई भी नहीं आया था।

रेनू : वो कौन सा राज्य था ?

मीना : उफ...। बहुत सवाल करती हो तुम।

रेनू : बताओ ना मम्मी।

मीना : अच्छा... ये बताओ कि कौन सा सदाबहार जंगल सबसे बड़ा है ?

रेनू : सुंदरबन ! ये ना सिर्फ भारत का बल्कि दुनिया का सबसे बड़ा सदाबहार जंगल है। ये भारत के पूर्वी तट पर है और इसका कुछ हिस्सा बांग्लादेश में भी आता है।

मीना : हां, तो वो राजकुमार वहीं पहुंच गया।

रेनू : मम्मी, ऐसा तो हो ही नहीं सकता। गुजरात से तैरते हुए सुंदरबन तक भला कोई कैसे पहुंच सकता है ? ये दोनों इलाके तो हमारे देश के दो विपरीत छोर हैं।

मीना : ये बताओ, कहानी कौन सुना रहा है ? तुम या मैं ?

रेनू : सॉरी मम्मी... आगे सुनाओ... आप ही सुना रही हैं कहानी।

मीना : तो इस तरह मछली बना हुआ वो राजकुमार अपने राज्य से काफी दूर पहुंच गया। अपने को सुरक्षित मानकर वो जैसे ही आराम करने को रुका, उसे मछुआरों ने पकड़ लिया।

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

मछुआरा : **(शिकायत भरे लहजे में)** अरे, देखो तो। कितनी छोटी मछली है। ये मछलियां भी हर रोज छोटी ही होती जा रही हैं।

दयानंद : तो फिर तुम मुझे क्यों पकड़ रहे हो मछुआरे ?

मछुआरा : **(चकित स्वर में)** अरे... ये क्या..। तुम तो बोलने वाली मछली हो।

दयानंद : हां, मुझ पर दया करो, मुझे छोड़ दो। तुम खुद ही कह रहे हो कि मैं काफी छोटी मछली हूं। मेरे बजाय तुम किसी बड़ी मछली को पकड़ लो।

मछुआरा : अरे, कहां से पकड़ लें बड़ी मछली...। पहले ये इलाका काफी बड़ी और स्वादिष्ट मछलियों से भरा हुआ था। तब हमारे कबीले के लोग ही यहां मछलियां पकड़ते थे। बाद में बाहर के दूसरे लोगों को भी इस जगह का पता चला तो उन्होंने भी यहां मछलियां पकड़ना शुरू कर दिया।

दयानंद : तो क्या अब यहां मछलियों की कमी है?

मछुआरा : दरअसल, बाहर से लोग विशालकाय नावों में बड़े – बड़े जाल लेकर आए और उन्होंने यहां मछलियों का अंधाधुंध शिकार शुरू कर दिया। उन्होंने इस बात का भी ख्याल नहीं रखा कि जिन मछलियों को वो पकड़ रहे हैं वो कितनी बड़ी हैं, छोटी हैं या फिर मछलियों के बच्चे हैं। उन्होंने यहां इस कदर मछलियों का शिकार किया कि मछलियों को बढ़ने और अपनी तादाद बढ़ाने तक का पर्याप्त वक्त नहीं मिला। यही वजह है कि अब यहां काफी कम मछलियां ही बची हुई हैं।

दयानंद : तो, इसीलिये आप भी मेरी जैसी छोटी मछली को पकड़ रहे हो ?

मछुआरा : अरे नहीं... मैं भला उन भारी-भरकम सेठों का मुकाबला कैसे कर सकता हूं। मेरी तो नाव भी बिक गई और जाल भी। मैं तो अब उनकी नावों में पगार पर काम करता हूं। अब मैं बस वही करता हूं जो वो लोग कहते हैं।

दयानंद : मैं तुमसे गुजारिश करता हूं कि तुम मुझे छोड़ दो। मुझ पर रहम करो।

मछुआरा : लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता हूं। जब मैं कुछ कमाऊंगा, तभी अपने परिवार को पाल सकूंगा। तुम्हारा आकार छोटा बेशक है लेकिन तुम बहुत सुंदर हो। मुझे लगता है कि अगर मैं तुम्हें रानी को सौंप दूं तो वो काफी खुश होंगी और मुझे इनाम भी देंगी।

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

मीना : और इस तरह से रानी उस अनूठी मछली को पाकर काफी खुश थी। रानी उस छोटी सी मछली को खूब प्यार से रखती और रानी को उससे बहुत लगाव हो गया था। रानी ने मछली को कांच के एक कटोरे में रखा और उसे उबले हुए चावल खिलाए। रानी उस मछली को राजकुमार मछली कहा करती थी। हालांकि उसे ये मालूम नहीं था कि वो असल में एक राजकुमार ही है। एक दिन रानी ने देखा कि राजकुमार मछली काफी उदास है।

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

रानी : क्या बात है राजकुमार मछली...। सब ठीक तो है ना ?

दयानंद : महारानी, ये कटोरी बहुत छोटी है, मुझे इसमें दिक्कत सी होती है।

रानी : **(चौंकते हुए)** अरे वाह..। तुम तो बोल भी सकते हो।

दयानंद : हां, मैं बोल सकता हूं।

रानी : लेकिन तुमने अब तक कुछ कहा क्यों नहीं ?

दयानंद : मुझे डर था कि कहीं मेरे साथ फिर कोई अनहोनी ना हो जाए।

रानी : घबराओ मत राजकुमार मछली, तुम्हें कुछ भी नुकसान नहीं होगा। लेकिन ये बताओ कि आखिर तुम बातचीत कैसे कर लेते हो। तुम कहां के रहने वाले हो ?

दयानंद : दरअसल, यहां से काफी दूर का निवासी हूं। यहां तक पहुंचने के लिए मैंने भारत के पूरे समुद्री तट की यात्रा की है।

रानी : तब तो तुमने अपने रास्ते में काफी कुछ देखा होगा !

दयानंद : हां, मैं अरब सागर से होते हुए कोंकण, मालाबार तट और लक्ष्यद्वीप तक तैरता रहा। इसके बाद मैं भारतीय उपमहाद्वीप के एकदम दक्षिणी छोर यानी कन्याकुमारी पहुंचा और फिर मन्नार की खाड़ी को पार किया। फिर मैं बंगाल की खाड़ी के तट के सहारे यात्रा करता हुआ आपके राज्य तक आ पहुंचा। इस सफर में मैंने ऐसे-ऐसे समुद्री जीव-जंतु देखे जिन्हें कहीं और देख पाना नामुमकिन है। कहीं पर मूंगे की चट्टानें थीं तो कहीं तमाम किस्म की समुद्री मछलियां और सांप। मैंने समुद्री कछुए भी देखे और बेहद खूबसूरत समुद्री घास के रंगबिरंगे इलाके भी।

रानी : ये सब तो किसी परीलोक से कम नहीं !

दयानंद : लेकिन वहां सब कुछ अच्छा ही अच्छा नहीं था। अपनी इस यात्रा में मैंने वो सब भी देखा जिसने दिल को दुखी कर दिया।

रानी : अच्छा ? ऐसा क्या देख लिया तुमने राजकुमार मछली ?

दयानंद : मैंने देखा कि कचरे के गंदे नाले सीधे समुद्र में गिर रहे थे। कई जगह पर बड़े-बड़े ड्रमों से काले जहरीले तरल पदार्थ और खतरनाक कैमिकल समुद्र के साफ पानी में उड़ेला जा रहा था। बड़ा ही दिल दहलाने वाला मंजर था वो, कई सारे जीव-जन्तु तड़पकर दम तोड़ रहे थे।

रानी : मेरे राज्य में तो ये सब नहीं होता है !

दयानंद : लेकिन आपका राज्य भी इन बुराइयों से पूरी तरह अछूता नहीं है। हालांकि आपका राज्य दूसरे तमाम इलाकों की तुलना में बेहतर है।

रानी : तुम तो काफी अदब से बोलते हो राजकुमार मछली। तुम्हारी बातों को सुनकर लगता है कि तुम एक शाही शख्सियत हो।

दयानंद : आपने बिल्कुल सही कहा। मेरी कहानी तो काफी दुखभरी है। मैं एक असली का राजकुमार था। मेरे पिताजी मुझे पूरे राज्य का राजा बनाना चाहते थे। इससे मेरा भाई बहुत नाराज हो गया और उसने जादुई ताकतों की मदद से मुझे एक मछली में बदल दिया।

रानी : **(जोर-जोर से हंसते हुए)** मैं भी जादू जानती हूं। हकीकत में तो मैं भी एक डायन हूं।

दयानंद : क्या कहा ? सच में। मुझ पर दया करो और मुझे फिर से इंसानी रूप दे दो। इसके बदले तुम जो भी कहोगी, मैं करूंगा।

रानी : अभी तुमने मुझे समुद्र की अनोखी जगहों के बारे में बताया था। अगर तुम मुझे वहां की सैर करा दोगे तो मैं खुशी-खुशी तुम्हें फिर से इंसान में बदल दूंगी।

दयानंद : ठीक है... मैं तैयार हूं।

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

मीना : प्यारी बेटी रेनू, इसके बाद रानी ने खुद को एक मछली में बदल दिया और वो मछली बने हुए दयानंद के साथ भारत के समुद्र तटों की सैर पर निकल पड़ी।

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

दयानंद : महारानी, सबसे पहले मैं आपको भारत के ऐसे तटों की यात्रा करवाता हूं जो गीली रेत या कीचड़ से बने हैं।

रानी : मतलब ?

दयानंद : मतलब ये कि, इस तरह के समुद्री तट भारत में बेहद आम हैं। कई वर्षों से ज्वार के कारण समुद्र की लहरें अपने पीछे कीचड़-मिट्टी छोड़ते चली जाती हैं। लगातार पानी के संपर्क की वजह यहां की जमीन नरम रहती है।

रानी : देखो ! वहां ... उधर केकड़ा है।

दयानंद : हां, वहां बहुत सारे केकड़े हैं और वो भी किसी खास वजह से ही यहां आए हैं। यहां खाने की भी तमाम स्वादिष्ट चीजें हैं।

(चिड़ियों की चहचहाहट)

रानी : वो क्या हैं ? ऐसे पक्षी तो मैंने पहले कभी नहीं देखे।

दयानंद : मेरे ख्याल से वो प्रवासी पक्षी हैं। मौसम बदलने के साथ ही ये एक जगह से दूसरी जगह की यात्रा करते हैं। कीचड़ से लगने वाले ये नरम समुद्र तट इन पक्षियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। ये प्रवासी पक्षी अपनी यात्रा के दौरान इन्ही जगहों पर रुककर अपना पेट भरते हैं और फिर आगे का सफर तय करते हैं।

रानी : **(सहमे हुए स्वर में)** देखो तो जरा, उनकी चोंच और पैर कितने बड़े-बड़े हैं। वो अपनी तीखी चोंच से हमें किसी भी वक्त जख्मी कर सकते हैं। हमें किसी सुरक्षित जगह पर जाना चाहिए।

दयानंद : हां .. हां.. इधर आओ। इसके लिए समुद्र घास की आड़ लेना ठीक रहेगा।

रानी : हां, ये ज्यादा सुरक्षित है। जरा उधर तो देखो....।

दयानंद : अरे, वो तो समुद्री कछुआ है। जमीन पर तो वो कितने सुस्त नजर आते हैं। और यहां देखो वो कछुआ कितनी खूबसूरती से तैर रहा है।

रानी : यहां, देखने के लिए और क्या-क्या खास है ?

दयानंद : बहुत सारी जगहे हैं, कई चट्टानी तट भी हैं लेकिन वो यहां से काफी दूर हैं। वहां की यात्रा के दौरान आपको बहुत सारे समुद्री स्पंज और अनूठे समुद्री जीव भी दिखेंगे। बस यूं समझ लो कि ये सब कुछ किसी दूसरी दुनिया की सैर जैसा होगा।

रानी : क्या यहां नजदीक में ऐसा कुछ नहीं है ?

दयानंद : है तो सही... लेकिन मैं चाहता हूं कि आप पहले यहां के समुद्र तट देख लें।

रानी : मतलब ?

दयानंद : मुझे पूरा यकीन है कि किसी मछली की नजर से आपने पहले ये सब नहीं देखा होगा।

रानी : हां, मैं बचपन से एक समुद्र तट पर अक्सर जाती थी। लेकिन ये काफी पुरानी बात है। अब फिर से उस तट को देखना काफी मजेदार रहेगा।

दयानंद : चलिये... तब तो चलते हैं।

रानी : ठीक है... आगे – आगे मैं चलती हूं।

(समुद्र की लहरों की आवाज़)

रानी : **(चौंकते हुए)** अरे... ये क्या..। मेरा प्यार समुद्र तट कहां गया...। सब कुछ कितना बदल गया है यहां।

दयानंद : क्या हुआ महारानी... क्या बात है ?

रानी : यहां पर तो बेहद खूबसूरत और लंबा सा... रेतीला समुद्र तट हुआ करता था। तमाम लोग यहां सैर के लिए आते थे। और यहीं पर मछुआरे अपनी नावों और मछली पकड़ने के जाल रखा करते थे। **(उदास स्वर में)** लेकिन अब तो ये काफी छोटा और बंजर सा हो गया है। आखिर ऐसा कैसे हो गया ?

दयानंद : **(उदास स्वर में)** ये सब धीरे-धीरे कई वर्षों में हुआ होगा। समुद्र की लहरों के जरिये तटीय क्षेत्र धीरे-धीरे कम होता चला गया और अब ये हालत हो गई। ये और भी कई जगहों पर हुआ है। वहां पर एक बड़ा सा गड्ढा देख रही हैं ना आप ?

रानी : हां... मैं भी हैरत में हूं कि आखिर ये कैसे बना होगा।

दयानंद : दरअसल, ये गड्ढा रेत खनन करने वालों ने बनाया है। रेत निकालने के लिए वो लोग बड़ी – बड़ी मशीनें लेकर आते हैं और इस तरह से विशाल गड्ढे बनाते रहते हैं। इन गड्ढों की वजह से तट का कटाव तेजी से होता जाता है।

रानी : **(गुस्से से)** ये तो बहुत गलत बात है..। मैं ये सब नहीं होने दूंगी।

दयानंद : आपको इतने में ही गुस्सा आ गया...। जबकि यहां तो अभी बहुत कुछ बाकी है।

रानी : क्या इससे भी बदतर ?

दयानंद : महारानी, आप मेरे पीछे-पीछे आइये। मैं आपको ऐसी जगह दिखाऊंगा जहां इंसान खुद के लिए ही जहरीले हालात पैदा कर रहा है।

रानी : **(परेशान स्वर में)** ओह.... ये कैसी दुर्गंध आ रही है ?

दयानंद : लगता है आसपास कोई चमड़ा फैक्ट्री है। जरा उधर देखो, बड़े – बड़े पाइपों से कितना सारा गंदा केमिकल सीधे समुद्र में गिराया जा रहा है।

रानी : **(दुख व गुस्से के साथ)** ओह..., ये तो बहुत खराब है। इससे से यहां की मछलियां ही जहरीली हो जाएंगी।

दयानंद : सिर्फ मछलियां ही नहीं बल्कि इसका असर तो उन जलीय पौधों पर भी पड़ता है जो छोटी-छोटी मछलियों का भोजन होते हैं। फिर ये छोटी मछलियां बड़ी मछलियों का शिकार बनती हैं और इस तरह से बड़ी मछलियों के शरीर में काफी जहरीले तत्व जमा हो जाते हैं। इसके बाद इन मछलियां को मछुआरे पकड़ते और खाते हैं।

रानी : और शायद उन्हें इस सबका अंदाजा भी ना हो।

दयानंद : अगर मछुआरों को इसकी जानकारी है... तो भी वो इन फैक्ट्रियों को बंद तो नहीं करवा सकते ना ?

रानी : **(दुखी स्वर में)** यहां आकर तो मन बहुत दुखी हो गया..। चलो, यहां से वापस लौटते हैं।

(समुद्र की लहरों का शोर)

रानी : राजकुमार मछली, भले की यहां के हालात बेहद भयानक हैं लेकिन इस यात्रा के लिए मैं तुम्हारी शुक्रगुजार हूं। एक मछली की नजर से ही सही, मुझे अपने राज्य की सही तस्वीर देखने को तो मिली। तुमने मुझे कुदरत की खूबसूरती भी दिखाई और भयानक स्थितियां भी। मेरी पूरी कोशिश रहेगी कि ये सुंदरता बनी रहे और भयानक स्थितियां खत्म हों। मैं भी अपने वादे के मुताबिक तुम्हें जादू से मुक्त करती हूं।

(समुद्र की लहरों का शोर)

दयानंद : वाह...। मैं अपने असली रूप में वापस आ रहा हूं। महारानी आपका बहुत – बहुत शुक्रिया। आपके आशीर्वाद से अब मैं अपने राज्य लौट सकूंगा और अपने भाई से उसके विश्वासघात

का बदला भी लूंगा।

रानी : अगर तुम अपने भाई से बदला लेने जा रहे हो तो मेरी भी एक बात का ध्यान रखना।

(समुद्र की लहरों का शोर)

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

(रेनू का घर / रात का वक्त)

मीना : तो प्यारी बेटी, इसके बाद रानी ने राजकुमार के कान में कुछ कहा और उसके चहरे पर बड़ी सी मुस्कान तैर गई। राजकुमार ने रानी का शुक्रिया अदा किया और वो अपने घर के लिए निकल पड़ा।

रेनू : तब वहां क्या चल रहा था मम्मी ?

मीना : वहां भी सबकुछ ठीक नहीं था। राजकुमार के पीठ पीछे उसके पिताजी का दिल तो टूट ही गया था, आखिर उनका एक बेटा उनसे बिछुड़ चुका था ना ? वो गहरे शोक में थे जबकि आलसी राजकुमार ने पूरा राजकाज संभाला हुआ था।

रेनू : ओह

मीना : हां, उसका पूरा राजकाज लालच के जोर पर ही चल रहा था। हर ओर अराजकता थी। उसके राज्य के सदाबहार जंगल खत्म हो रहे थे। छोटी-छोटी खाड़ियों को मछलियों के फार्म में तब्दील कर दिया गया था। समुद्र के किनारे बसे शहरों का कचरा सीधे समुद्र में ही डाला जा रहा था। मूंगे की चट्टानों को तबाह कर दिया गया था। ह्वेल और शार्कों का बड़े पैमाने में शिकार किया जा रहा था। लोग ना सिर्फ इनको खा रहे थे बल्कि इनकी चर्बी का इस्तेमाल ईंधन के लिए भी कर रहे थे।

रेनू : मम्मी, अच्छे राजकुमार दयानंद को तो ये सब देखकर बहुत गुस्सा आया होगा ना ?

मीना : बिल्कुल सही कहा रेनू तुमने। अच्छे राजकुमार ने जब ये सब देखा तो वो सन्न रह गया। वो सीधे राजमहल में अपने पिताजी के पास गया। राजा को अपने बिछुड़े हुए पुत्र से मिलकर काफी खुशी हुई। राजकुमार ने अपने पिता को पूरी दास्तान सुनाई और फिर वो दोनों आलसी राजकुमार और उसकी पत्नी से मिलने को चल पड़े। जब वो दोनों आलसी राजकुमार के महल में पहुंचे तो अपने भाई को देखकर आलसी राजकुमार के पैरों तले

जमीन खिसक गई।

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

हीरानंद : **(चौंकते हुए)** अरे... ये क्या...। ये भला कैसे हो सकता है। दयानंद तुम यहां ?

दयानंद : हीरानंद, तुमने सोचा कि तुम्हें मुझसे छुटकारा मिल गया है। लेकिन मैं जिंदा हूं और तुम्हारे सामने खड़ा हूं। मेरी गैरमौजूदगी में तुमने राज्य को बहुत नुकसान पहुंचाया है। लेकिन अब ये आगे को नहीं चलेगा।

हीरानंद : **(बचाव के लहजे में)** लेकिन मैंने तो कुछ भी नहीं किया...। मेरा यकीन करो।

दयानंद : **(व्यंग्य भरे स्वर में)** बिल्कुल सही...। तुमने तो कुछ भी नहीं किया, तुम तो यूं ही खामोश खड़े थे। दूसरे लोग ही वो सबकुछ करते रहे जो तुम चाहते थे। अभी भी वक्त है कि तुम अपनी गलती स्वीकार कर लो।

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

(रेनू का घर / रात का वक्त)

मीना : **...** और इसके बाद अच्छे राजकुमार ने रानी के बताये हुए वो जादुई शब्द दोहराये जो उसने राजकुमार के कान में कहे थे। इन जादुई शब्दों को सुनते ही आलसी राजकुमार और उसकी पत्नी मछली बन गये। ये सब करने को रानी ने ही राजकुमार से कहा था। एक मछली के रूप में रानी ने काफी कुछ अनुभव किया था। रानी को उम्मीद थी कि आलसी राजकुमार और उसकी पत्नी को मछली बनकर ही अपनी गलतियों का एहसास हो सकेगा।

रेनू : **(अनमने लहजे में)** ओह...। तो क्या ये कहानीं यहीं पर खत्म हो जाती है।

मीना : हां, लेकिन तुम्हें क्या लग रहा है ?

रेनू : मेरा मतलब है कि क्या राजकुमार को उसका हक मिला या नहीं ?

मीना : अच्छा, तभी तुम इतना उदास लग रही हो।

रेनू : मैं तो ये सोच रही हूं कि राजकुमार मछली ने जो कुछ भी बताया वो सब तो आज भी हो ही

रहा है। भयानक प्रदूषण के जीव-जन्तुओं की मौत लगातार हो रही हैं।

मीना : **(दुखी स्वर में)** हां, वो तो है।

रेनू : मम्मी, हमारे समुद्र तटों की रक्षा के लिए कुछ काम हो भी रहे हैं या नहीं ?

मीना : ऐसा नहीं है बेटी, बहुत सारा काम किया जा रहा है। सरकारी स्तर पर भी समुद्र के संरक्षण के मुद्दे को काफी अहमियत दी गई है। सागरों में प्रदूषण को कम करने और मछलियों के बेतहाशा शिकार को रोकने की दिशा में भी कई कदम उठाए गये हैं।

रेनू : सरकार मछली पकड़ने के काम में ही रोक क्यों नहीं लगा देती है मम्मी ?

मीना : अरे बेटी, ऐसा भला कैसे हो सकता है। तुम्हें जानकार हैरानी होगी कि तटीय इलाकों के दस लाख से ज्यादा लोग अपनी आजीविका के लिए मछली के कारोबार से जुड़े हैं।

रेनू : तो फिर मछलियों का क्या होगा ?

मीना : यही तो एक बड़ी समस्या है। भारत में पिछले पचास वर्षों के दौरान मछली उत्पादन में नौ गुना की बढ़ोतरी हुई है। मछलियों की मांग भी लगातार बढ़ती जा रही है। और अब भी मछलियों की तादाद इतनी नहीं है कि वो पर्याप्त हो।

रेनू : और अगर यही स्थिति बनी रही तो ?

मीना : तो हालात भयावह हो जाएंगे। मछलियों की तादाद घटती चली जाएगी और मछलियों से जुड़े लोगों को दो जून की रोटी हासिल करना मुश्किल हो जाएगा।

रेनू : तब तो हमें समुद्र का संरक्षण करना ही होगा, ना सिर्फ समुद्री जीव-जंतुओं के लिए... बल्कि अपने लिये भी।

मीना : बिल्कुल !

रेनू : मेरे ख्याल से ज्यादातर लोगों को ये सब पता ही होगा।

मीना : बिल्कुल, आजकल लोग ये सब तो समझते ही हैं। और सतत विकास की अवधारणा भी तो यही है... यानी हमारे काम करने का अंदाज ऐसा हो कि वो आगे भी चलता रहे। ऐसा ना हो कि हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए हम बेहद दूषित और खतरनाक वातावरण छोड़ जाएं।

रेनू : अच्छा। इसका मतलब ये हुआ कि जब आप समुद्र और मछलियों की रक्षा की बात कर रही

हैं तो ये सब आप मेरे लिए कर रही हैं ?

मीना : बिल्कुल। मैं जो भी कर रही हूं वो सब तुम्हारे लिए ही तो है बेटी।

रेनू : वाह...। मम्मी, क्या आप मुझे एक और कहानी सुना सकती हो प्लीज़ ?

मीना : नहीं...। अब तुम सो जाओ रेनू। वैसे भी तुमने एक कहानी सुनकर सोने का वादा किया था।

रेनू : हां, वादा तो किया था...। चलो ठीक है, सो ही जाती हूं। गुड नाइट मम्मी।

मीना : गुडनाइट बेटी...। उम्मीद करो कि हमें एक बेहतर कल मिले।

---------- CLOSING MUSIC ----------